37

छत्तीसगढ़ी लोकगाथा पण्डवानी की गायन शैली

डॉ गौरी अग्रवाल
प्राध्यापक हिन्दी
डॉ. राधाबाई शासकीय नवीन कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय मठपारा, रायपुर (छत्तीसगढ़)

भूमिका —

छत्तीसगढ़ी का जन जीवन लोक साहित्य से अनुप्राणित है। लोकसाहित्य की सभी विधाएँ इनकी श्वासों में रचती बसती हैं। इन विधाओं में चाहे लोकगीत हो, लोक नृत्य हो, लोककथा हो या लोकगाथा ये सभी लोकरंग, गाँव की चौपाल से निकलकर नगर, महानगर, प्रान्त, देश और उसकी सीमा पार कर अपने विकास और प्रसिध्दि की पताका फहरा रही हैं। इसमें से भी लोकगाथा की बात तो कुछ और ही है। ये लोकगाथाएँ कभी ऊँचे पर्वत के मुंडेर पर गाये गीत के अलाप के समान तो कभी नदियों की कलकल से निकली ताल और लय के समान तो कभी बाँस की बाँसुरी की सुरीली ध्वनि के समान बिना कलम स्याही के जनमानस में अपनत्व के साथ कथा को साकार करती हैं। गाथा लिखने ओर गाने की परम्परा कब से प्रारंभ हुई यह कहना सुनिश्चित नहीं है परंतु इतना तो निश्चित ही कहा जा सकता है कि गाथा कंठ में प्रारंभ से सुरक्षित रही।

लोकगाथा पंडवानी

नामकरण — ''पंडवानी'' का शब्दिक अर्थ है पांडवों की कथा। यह कथा वेद व्यास द्वारा रचित महाकाव्य महाभारत पर आधारित लोककथा है। छत्तीसगढ़ भाषा में पांडव के लिए पंडवा शब्द और बाद में आनी प्रत्यय लगा हुआ है जिसका अर्थ है 'आयी हुई' अर्थात पंडवानी इस संदर्भ में यह कथन उल्लेखनीय है — ''महाभारत की कथा का छत्तीसगढ़ी अनुवादी रूप और उसका गायन है पंडवानी। पंडवानी में 'नी' के योग से निष्पन्न पंडवानी का अर्थ है पांडव कथा।'' पंडवानी में पांडवों से संबंधित विविध कथाओं लोकमान्यताओं और विश्वासों का समाहार है जो साथ श्रुति परम्परा के माध्यम से लोकजीवन में प्रचलित हुई।

स्त्रोत एवं स्वरूप —

पंडवानी लोकगाथा छत्तीसगढ़ प्रदेश की एक विशिष्ट सांस्कृतिक धरोहर है। इसकी गायन परम्परा का जैसा वर्तमान स्वरूप इस अंचल में मिलता है वैसा भारत के अन्य क्षेत्रों में नहीं दिखाई देता। पंडवानी की गायन परम्परा का प्रारंभ कब से हुई — इसका कोई निश्चित प्रमाण नहीं है। इसके बावजूद पंडवानी गायन की परम्परा प्राचीन है। छत्तीसगढ़ अंचल मानवीय गरिमा से संयुक्त विविध चरितों का आख्यानक स्थल है। कई लोक विश्वास, लोकमत, एवं लोक कथाएं हैं जो पंडवानी की प्राचीनता उसके स्त्रोत और स्वरूप को उजागर करते हैं। जैसे 'मोर ध्वज की कथा को रतनपुर (बिलासपुर) से जोड़ा जाता हैं। रतनपुर में कृष्णार्जुनी तालाब हैं। कहा जाता है कि कृष्ण और अर्जुन ने इस अंचल की यात्रा की थी। उन्ही की स्मृति में यह तालाब खुदवाया गया है। ''आज भी पूस—पुन्नी के दिन यहाँ मेला भरता है। हजारो की संख्या में लोग इस पवित्र तालाब में स्नान कर अपना जन्म धन्य मानते है।'' रायपुर एवं बिलासपुर जिले में इस वंश के बहुत से ताम्रपत्र और लेख प्राप्त हुए हैं। छत्तीसगढ़ के आंरग जिले में पिता मोरध्वज के अपने पुत्र ताम्रध्वज को आरे से चिरते हुए प्रस्तर चित्र मिले है। मोरध्वज एक पौराणिक पात्र है जो अपनी दानशीलता और भक्ति के लिए प्रसिध्द हैं। इसकी परीक्षा कृष्ण ने ली थी। अर्जुन को कृष्ण के प्रति प्रेम का बड़ा अभिमान था परंतु इससे अधिक त्याग और प्रेम मोरध्वज कृष्ण से करते थे। कृष्ण ने अर्जुन की संतुष्टि के लिए ये परीक्षा ली थी। इस प्रकार कृष्ण और अर्जुन महाभारत के सूत्रधार और नायक हैं। अत: पंडवानी का संबंध छत्तीसगढ़ से रहा है। छत्तीसगढ़ में दो प्रमुख जनजातियां निवास करती हैं— पंडा और कंवर।

ये जातियां अपने आप को पांडवों और कौरवों का वंशज मानती हैं। पंडवानी कथा के स्त्रोत में इन जातियों की भी अहम् भूमिका है।

प्राचीन समय में छत्तीसगढ़ निवासी अपने श्रमपरिहार के लिए लोकगीत, और लोककथाओं को सबसे उत्तम, सुलभ और प्रिय माध्यम मानते थे। ये गीत एवं कथाएं जनरंजन के साथ आत्मप्रेरणा का कार्य भी करती थी। इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि पंडवानी गायन परम्परा तब से प्रारंभ हुई होगी। हॉलकि पंडवानी प्रारंभ में लोकभजन के रूप में गायी जाती रही है। पंडवानी लोकगाथा के संबंध एंक मत यह भी है कि यह कि छत्तीसगढ़ में देवार जाति घुमन्तु जीवन व्यतीत करते थे। यह जाति अपने जीवकोपार्जन के लिए इन्ही पांडवों की कथाओं को नृत्य एंव गायन के माध्यम से प्रस्तुत करते थे। आज भी देवार वृध्दजन रूंझू (लोकवाद्य) के साथ पंडवानी की कथा कहते हैं। इस संदर्भ में यह कथन विशेष रूप से उल्लेखनीय है— ''पंडवानी विशेष प्रकार की कथा गायन हैं, मुख्यत: परधान एवं देवार अंशत: पारधी भिम्मा नामक जातियाँ इसकी परम्परागत गायक हैं। इनके अतिरिक्त भ्रमणशील समुदायों में कुछ लोग और गोड़ कंवर आदि जातियां ही पंडवानी का गायन करती हैं। किन्तु ये पंडवानी के परम्परागत गायक नहीं हैं। ये शौकिया तौर पर व्यक्तिगत क्षमता के साथ गाते हैं। पंडवानी परधान जाति की वंशानुगत गायकी है। ये पीढ़ियों से पंडवानी का गायन अपने आस—पास के क्षेत्रों में घूमते हुए जहां रूक जाते थे, करते थे।''

पंडवानी के क्रमिक विकास के साथ इसका नया स्वरूप भी सामने आने लगा है। पहले एक ही पात्र पंडवानी गायन करता था अब इसके स्थान पर संख्या ८ से १० तक पहुंच गई है। वाद्यतंत्र में तम्बूरे, करताल और खंझेड़ी के स्थान पर ढोलक, तबला और मंजीरे का प्रयोग होने लगा है। चिकारा का स्थान हारमोनियम ने ले लिया है। सुप्रसिध्द पंडवानी गायक झाडूराम देवांगन के संस्मरण से पंडवानी के वर्तमान स्वरूप ज्ञात होता है ''एक समय की घटना है कि श्री नारायणप्रसाद वर्मा (झीपन खान वाले) की पंडवानी दुर्ग में चल रही थी। जो पंडवानी के पुराने गायक थे और मेरा कार्यक्रम दुर्ग के पास कसारीडीह में। वर्मा जी केवल तम्बूरा और खंझेरी के साथ गाते थे। तब मैने तबला, हारमोनियम और मंजीरे का प्रयोग शुरू कर दिया था। यह मेरे पंडवानी गायन की शुरूआत थी। फिर मेरे कार्यक्रम में श्रोताओं की भीड़ उमड़ पडती थी। इसका कारण केवल नये वाद्यों का प्रयोग था।'' पंडवानी के गायक इसके अतिरिक्त अब बेंजो, बांसुरी, का भी प्रयोग करने लगे हैं। आयोजन स्थल में भी परिवर्तन आया है। पंडवानी की सोंधी महक घर आंगन और गांव के चौरा से निकल कर नगर, महानगर, देश—विदेश में भी अपनी ख्याति अर्जित कर चुकी है। पंडवानी फ्रांस, जापान, इटली, रूस, अमेरिका, एडिनबरा, जर्मनी आदि विदेशों में प्रस्तुत होकर अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति का प्राप्त कर चुकी है।

इस प्रकार पंडवानी एक साथ कथा, गायन, नृत्य और अभिनय के तत्व को लेकर छत्तीसगढ़ अंचल में लोक साहित्य की प्रमुख विधा के रूप में वैशिष्ट्य अर्जित कर ली है। आज इस क्षेत्र में अनेक पंडवानी कलाकार तन—मन—धन से संकल्पित हो उसे अपने मुख्य कार्य के रूप में अपना लिया है। इनकी लम्बी सूची है। कुछ प्रमुख नाम पता इस प्रकार है—

क्रं.	कलाकार/दल का नाम	पता/स्थान	संख्य
१	प्रतिमा बारले	कबीरधाम	८
२	सुश्री शांति बाई	दुर्ग	८
३	पद्म श्री पूनाराम	रिंगनी	८
४	निषाद	भिलाई	८
५	ऋतु वर्मा	भिलाई	८
६	उषा बारले	भिलाई	८
७	पद्मभूषण तीजन	कोकडी	८
८	बाई	साजा	८
९	टोमिन बाई निषाद	पलारी	८
१०	श्री महेन्द्र सिंह	दुर्ग	८
११	चौहान	तिल्दा	८
१२	अर्जुन सेन	कुरूद	८
१३	कुमारी देवी निषाद	कांकेर	८
१४	सामेशास्त्री	रायपुर	८
१५	गोवर्धन देवांगन	बिलासपुर	१०
१६	अनसुया गंधर्व	राजिम	१०
१७	दुष्यंत द्विवेदी	छुरा	१०
१८	पूर्णिमा साहू	दुर्ग	१०
	सुश्री पुना बाई		
	तुलसी बाई		
	मानिकपुरी		
	शत्रुहन नेताम		

गायन शैली और परम्परा

छत्तीसगढ़ में पंडवानी को दो शैलियों में गायी जाता है—

१ वेदमती शैली।

२ कापालिक शैली।

पंडवानी की दोनों गायन शैलियों के संबंध में डॉ. बलदाऊ प्रसाद निर्मलकर का विचार है कि वेदमती पंडवानी महाभारत के कथा के आधार एवं वेद अनुमोदित है — जिसे मंच पर बैठ कर गाया जाता है और कापालिक पंडवानी महाभारत पर्व की कथा के अनुसार नहीं बल्कि लोकविश्वास से अनुमोदत हो कपोल कल्पित होकर गायी जाती है। इन कथाओं का संबंध पांडवों से है। कापालिक पंडवानी खड़े होकर गायी जाती है। इन दोनों गायन शैलियों के संबंध एक लोकगायक का यह कथन भी उल्लेखनीय है कि ''पंडवानी कथा गायन दो रूपों में किया जाता है। एक तो वेदशास्त्र में लिखित अनुसार जिसे वेदमती शाखा कहा जाता है और दूसरा लोकमान्यताओं, लोक विश्वासों के अनुसार जिसे कापालिक शाखा कहा जाता है। वेदमती शाखा के पंडवानी गायक, एक ओर जहाँ कथा सशक्त शिक्षाप्रद और आकर्षक शैली में प्रस्तुत करते हैं वहीं दूसरी ओर कापालिक शाखा के गायकों की कथा मूल कथा से सरोकार न होते हुए भी लोक विश्वासों की गहरी पैठ के कारण सच्चाई से बिल्कुल करीब और रोचक लगती है।'

१. वेदमती गायन शैली

वे कथाएं जो शास्त्र सम्मत एवं महाभारत के आधार पर पांडवों के चरित गायन के रूप में प्रस्तुत होती हैं — वह पंडवानी के वेदमती गायन शैली के नाम से अभिहित है। इसका गायन मूलत: बैठकर ही किया जाता है परंतु वर्तमान में खड़े होकर भी इस शैली में पंडवानी लोकगाथा गायी जाती है। अत: बैठकर एवं खड़े होकर दोनो ही तरह से इस शैली में पंडवानी का गायन किया जाता हैं। यद्यपि वेदमती शाखा की कथाएं महाभारत को आधार मानती है तथापि इस शाखा के पंडवानी गायक लोग श्री सबलसिंह चौहान द्वारा रचित महाभारत का अनुसरण करते हैं। इसके अंतर्गत आदि परब, सभा परब, बन परब, अश्वमेघ परब, स्वर्गारोहण परब आदि का गायन होता है। वेदमती गायन शैली की दो परम्पराएं दृष्टिगोचर होती हैं— १ मौखिक परम्परा २ लिखित परम्परा

मौखिक परम्परा —

यह मूलत: श्रुति पर आधारित गायन परम्परा है। इस परम्परा में गायन करने वाले गायक मूल कथाओं को सुनकर गाते हैं। इसका मुख्य कारण अशिक्षा और निरक्षरता है। चूंकि ये पढ़े लिखे नहीं होते अत: महाभारत का अध्ययन इनके लिये संभव नहीं होता है। इनकी मंडली का ही कोई अन्य सदस्य जिसे अक्षर ज्ञान होता है, उसके द्वारा मौखिक रूप से अन्य सदस्य सुनता है। फिर यथाशक्ति ग्रहण कर मौखिक रूप से गायन करते हैं। इस परम्परा में पद्मश्री तीजनबाई और ऋतु वर्मा का नाम आता था परंतु जनसाक्षरता अभियान के तहत अब ये पूर्णत: साक्षर है।

लिखित परम्परा —

लिखित परम्परा के अंतर्गत गायक—गायिकाएं ग्रंथों के अध्ययन कर आधार पर गायन करते है। श्रीसबल सिंह चौहान रचित महाभारत और महाभारत से संबंधित अन्य कथाओं को आधार बनाकर दोहा और चौपाइयों के साथ पंडवानी गाते हैं। इस गायन परम्परा में झाड़ूराम देवांगन, पूनाराम निषाद, चेतनराम देवागंन, प्रभा यादव, ईश्वरी चंद्राकर, प्रहलाद निषाद, खम्हन अस्तुरे के नाम प्रमुख है। इस गायन परम्परा में मूल कथा के साथ लोकरंग रूप का भी समावेश होता है।'' इसमें पद्य के साथ गद्यशैली का प्रयोग होता है।

यथा —

अइ ए कुन्ती महतारी, जेखर जबर हवय छाती
जेला कइथे ओ दाई, जोला कथे ग मईया
पांडव के महतारी ये न
ये बेटा कन्हैया
का होगे दाई
तोर बात तो मोला अइसे लागत हे कन्हैया
का बात ? मोर अर्जुन नइ बांचही ग

बिल्कुल नइ बांच ही दाई। जब तक करण के पास पंचमुखी बाण ल न लाइबे तब तक तक । तो मै अभी जाथवं कन्हैया अउ करन के पास पंचमुखी बाण ल मांग के लानत हवं।

२. कापालिक गायन शैली

कापालिक गायन शैली में कथाएं कल्पित ओर लोकमान्यताओं, विश्वासों पर आधारित है। जनरंजन, लोकरंजन हेतु ये पंडवानी गायन की परम्परा केवल छत्तीसगढ़ में ही मिलती है। जिसका आधार जनश्रुति

एवं वाचिक परम्परा है। इस गायन शैली में कथानक के पात्र के नाम महाभारत के पात्र के नाम हैं परंतु घटना एवं कथा का सरोकार केवल लोक ही होता है। डॉ. दयाशंकर शुक्ल का कथन है कि ''इस कथा में महाभारत के पास ऐतिहासिक प्रतीत होते हैं पर अनेक घटनाएं इतिहास में वर्णित नहीं है। संभवत: इनमें प्रभावोत्पादकता की दृष्टि से ही पात्रों को ऐतिहासिक रूप दे दिया गया है।''

कापालिक गायन शैली में मुख्यपात्र या नायक भीम है। वैसे तो महाभारत का नायक श्रीकृष्ण है किन्तु छत्तीसगढ़ में प्रचलित पंडवानी में भीम की आकृति–प्रकृति उसके शौर्य और पराक्रम का वर्णन गायक अपने अनुभव और कल्पना के आधार पर करता है। यथा–

बड़े बड़े बलिमन बाना धरके दऊँडय जी,
धरू–धरू, अमरू–अमरू, मारू–मारू ललकारय जी
अइसे तो सयना मोर महाजुध्द खेलय जी
अर्जुन बली तो बान ल सम्हालय जी
बान गोड़ी वाला बान मारक हवय जी
छूटत म एक ठन अऊ लागत म दू ठन जी
बरसे हजारा तो हजारा ग ए भाई
पानी बान मारय पवन बान काटय हो जी
बज्रबान, गदाबाण, विसीखगाण, सिलोहीबान
तोमन बान, फरखा बाण, रामबाण, विष्णुबाण
बरमाबाण, सिवबाण, हरेक हरेकनाम
अउ–अउ बरसा अर्जुन करिन जी।

इसी तरह इसी रंग में पंडवानी की अन्य कथाएं भी हैं– 'जैसे सेन्दुरागढ़ की लडाई (नकुल बिहाव) धोबनीनगढ़ की लड़ाई (सहदेव बिहाव)।

सारांशत: पंडवानी छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक धरोहर है। पंडवानी की गायन शैली अपनी विशिष्टताओं के आध ाार पर अन्तरराष्ट्रीय क्षितिज पर आरूढ़ हो गई है। महाभारत की कथा को लोककथा के रूप में इन दो गायन शैलियों के माध्यम से घर–घर तक पहुंचाने का लोकप्रिय कार्य पंडवानी गायकों ने लिया है। पंडवानी अनेक लोकगाथाओं में प्रमुख और विशिष्ट लोकगाथा है। यह महाकाव्य रूप दोनो शैलियों में १८ दिनों तक गायी जाती है– कभी–कभी तो इसकी प्रस्तुति इससे भी अधिक दिनों तक चलती है। महाभारत विशुध्द संस्कृत निष्ठ पद्यात्मक महाकाव्य है जबकि पंडवानी गद्य और पद्य दोनो रूपों में व्यक्त होती है–

यथा –

राजा किचक अऊ भीमसेन के भवन में ममा कीचक
अऊ भीमसेन के लड़ई मात गे गा। अउ भीमसेन रहे
तेन ओखर गोड़ ल गुटु–मुटु करे मुहाटी में सुतादिस
अउ खून से लिखिस रानी के भाई राजा के सारा
अउ कीचक गये कीन मारा
कौन मारा ? मैं मारा मैं मारा।।

''पंडवानी का प्रारंभ महाकाव्य के समान मंगलाचरण से होता है। इसमें जीवन की नश्वरता और ब्रम्हा की प्राप्ति आदि भाव से लेकर लोककीर्तन परम्परानुसार सुमरनी के पद से किया जाता है।

सदा भवानी दाहिने, सन्मुख गौरी गनेस
पंच देव रक्षा करें, ब्रहमा विष्णु महेश

रघुपति चरण मनाइके, व्यास देव धरि ध्यान
आदि पर्व भाषा रचेऊ, सबल सिंह चौहान।
अरे श्याम सुखदाई, गोर हलधर के भाई ग
भजन बिना बेड़ा पार नई होय भाई ग।

गुरू शिष्य परम्परा में यह पंडवानी मौखिक परम्परा के रूप गायी जाती रही है। फिर भी श्री सबल सिंह चौहान कृत महाभारत को आधार ग्रंथ मानकर संगीत, लय और अभिनय के अनूठे संगम के साथ बड़े ही माधुर्य ढंग से गायक कलाकार गाते हैं। इस गायन के माध्यम से धर्म, नीति, भातृ प्रेम, मित्रता, सेवा–सहयोग, सहिष्णुता, वचनपालन आदि की भावनाएं लोकमानस तक सम्प्रेषित होती है।

छत्तीसगढ़ प्रदेश के रायपुर, दुर्ग, भिलाई आदि क्षेत्रों में पंडवानी गायन परम्परा विशुध्द रूप से विद्यमान है। इसके अतिरिक्त मध्यप्रदेश से लगा हुआ क्षेत्र मंडला में महाभारत कथा गायी जाती है जिसे पंडुवानी के नाम से जाना जाता है। यहाँ की स्थानीय प्रधानजाति गोड़ है। जो कवि और गायक भी है जो पंडुवानी को प्रस्तुत करते हैं। ऐसे निमाड़ी क्षेत्र में निमाड़ी लोग दोहा और चौपाई में महाभारत की कथाओं का गायन करते हैं। बुदेलखंड में 'बेरायटा' के नाम से महाभारत की कथा गायी जाती है। मालवा और राजस्थान में 'होड़' गीत गाया जाता है। जिसमें गोप जीवन को उजागर करने वाली कथा, पांडव कथा, ''रूखमणी हरण' आदि की कथा मालवी प्रबंध ा में मिलते हैं, उत्तरांचल के गढ़पाल क्षेत्र में 'पंडवर्ती कथा' प्रसिध्द है, जो महाभारत की पांडव की ही कथा है। यहाँ कृष्ण और पांडव के 'जागर' जो लोकगाथा का ही प्रकार है– विशेष प्रसिध्द है। बिहार के पठारी

भाग में 'छउनृत्य' में नर्तक मुखौटा लगाकर महाभारत की कथा को नृत्य और अभिनय के माध्यम से व्यक्त करते हैं, परंतु संवाद नहीं होते जो पंडवानी गायन परम्परा से भिन्नता को दर्शाती है। परंतु यह नृत्य यहाँ के आदिवासियों की पहचान है। 'छउ नृत्य' के लिए श्री नेपाल महतो को पदम्श्री से सम्मानित किया गया है। छत्तीसगढ़ की पंडवानी का प्रचार प्रसार बखूबी से है क्योंकि छत्तीसगढ़ी के निवासी कृषि कार्य से मुक्त होकर अपने अतिरिक्त जीवकोपार्जन के लिए महाराष्ट्र राजस्थान, गुजरात, कलकता, लखनऊ कानपुर, आसाम आदि राज्यों में हजारों की संख्या में जाते हैं। साथ ही अपने श्रमपरिहार एवं अपनी मिट्टी की गंध के प्रति आशातीत होकर अपनों के बीच, पंडवानी, नाचा, पंथी का गीत आयोजन करते हैं। अत: इन क्षेत्रों में पंडवानी गायन की स्वतंत्र परम्परा तो नहीं परंतु इन्ही जीविकोपार्जी कलाकारों के माध्यम से छत्तीसगढ़ धरा की सोंधी सुंगध लोकरंग पंडवानी के माध्यम से बिखर कर दिगन्त को पार कर गयी है। कहने का तात्पर्य यह है कि यद्यपि भारत के भिन्न क्षेत्रों में छत्तीसगढ़ी लोकरंग कहीं गीत, कहीं नृत्य कही, गाथा के रूप अभिव्यक्ति पाती रही है तथापि पंडवानी लोक गायन विद्या स्वतंत्र एवं लोकप्रिय विधा है जो छत्तीसगढ़ की विशिष्ट विधा है।

संदर्भ ग्रंथ —

१ झाडूराम देवांगन और उनकी पंडवानी गायकी — बाबूलाल शुक्ल —चौमास अंक ४ — १९८९ — पृ. २९ —

२ छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक धरोहर है पंडवानी, — नंद किशोर तिवारी — पंडवानी मेला स्मारिका अक्टूबर — १९९१ — पृ. — २०

३ पंडवानी — नवल किशोर शुक्ल — चौमासा अंक — ११ — पृ. १५

४ श्री झाडूराम से साक्षात्कार — डॉ. पी.सी. लाल यादव — ग्राम खोरसी, जिला — रायपुर दिनांक २०.२०.१९९१

५ अनेक लोककलाओं का संगम है पंडवानी — पुनूराम साहू — राज, नवभारत — १९९१ २१ अप्रैल

६ पंडवानी परम्परा और प्रयोग — डॉ. पी.सी. लाल यादव — सन् २०११ — पृ. ४३

७ छत्तीसगढ़ लोक साहित्य का अध्ययन — डॉ. दया शंकर शुक्ल —सन् २०११— पृ. २४०

❑❑❑

38

महेश एलकुंचवार कृत 'युगांत' के संवाद

दुर्गाडे शीतल गुलाबराव
पीएच.डी.शोधयात्रा
पुणे विद्यापीठ पुणे ०७

****

'युगांत' महेश एलकुंचवार द्वारा लिखित एक नाट्यत्रयी है। अर्थात 'बाड़े की घेराबंदी' (वाडा चिरेबंदी) 'तालाब के पास खण्डहर' (मग्न तळयाकाठी) और 'युगांत' इन तीन नाटकों का एकत्रित सूत्र युगांत नाट्यत्रयी है। मनुष्य के जीवन में विभिन्न परिस्थितियों में घटनेवाली विविध घटनाएँ और इन घटनाओं का एक दूसरें से सूक्ष्म संबंध नाट्यत्रयी में चित्रित हुआ है। ''इस नाटक में धरणगॉव के देशपांडे परिवार की तीन पीढ़ियों के माध्यम से ग्रामीण जीवन की सहजता, समन्वयवादिता, एकरूपता के साथ सामूहिक निष्क्रियता, भिरूता, मिथ्याप्रदर्शन प्रियता, चारित्रिक भ्रष्टता जैसी प्रवृत्तियों कों प्रभावी ढंग से उद्घाटित किया है।'' इस प्रकार इस नाट्यत्रयी का प्रत्येक भाग अपने—आप में परिपूर्ण है।

'बाड़े की घेराबंदी' इस नाट्यत्रयी का प्रथम भाग/नाटक है। देशपांडे परिवार की परंपरा का बाड़ा एक महत्वपूर्ण भाग है। जिसमें बाड़े की पहली पीढि के मुखियॉ तात्याजी की मौत हुई है। इस नाटक में तात्याजी के मौत के समय इकट्ठा हुए परिवार के लोगों की मानसिकता, शहरी और ग्रामीण परिवेश की विचारधारा, बदलती संवेदनाएँ, परंपराएँ आदि का चित्रण इसमें हुआ है। नाटक में तात्याजी की भास्कर, सुधिर, चंदू और प्रभा यह चार संतान है। भास्कर उसकी पत्नी भाभी (वहिनी), प्रभा और चंदू गॉव में रहते है। भास्कर को पराग और रंजू ये दो बच्चे है। चंदू अविवाहित है तथा प्रभा भी अविवाहित है। सुधीर और अंजली को एक बेटा हैं — अभय । ये तीनों मुंबई में रहते है। इस नाटक में बाड़े के प्रति हर एक पात्र की जुड़ी हुई संवेदनाएँ, खास्ताहाल होती खानदानी